ब्रह्माकन्या मृत्यु

महाप्रजापति ब्रह्मा ने प्रजा की सृष्टि के क्रम में जब यह अनुभव किया कि प्रजा अत्यंत वृद्धि को प्राप्त हो गयी है, और पृथ्वी इस भार को वहन करने में असमर्थ हो रही है तो वे पृथ्वी के इस भार को कम करने हेतु प्रजा संहार का उपाय सोचने लगे, अंतत: जब वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाये तो उन्हें बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ। उनके क्रोधित होने से अनल की सृष्टि हुई जो प्रजाजनों को दग्ध करने लगी। इस दृश्य को देखकर महादेव अतीव दु:खित हृदय से ब्रह्मा जी के पास उपस्थित हुए एवम् ब्रह्मा के स्वसृष्ट प्रजा जन को दग्ध न करने वरन् उनकी रक्षा हेतु आग्रह किया। महादेव का अनुरोध सुनकर ब्रह्मा ने तब कहा ''प्रजा की इतनी वृद्धि हो गयी है कि धरणी इस भार को वहन करने में समर्थ नहीं हो पा रही है; इसीलिए पृथ्वी ने मुझसे कातरभाव में प्रार्थना किया अतएव वसुधा के इस भार को कम करने हेतु प्रजा संहार आवश्यक हो गया है।'' यह सुनकर महादेव ने कहा, ''आप क्रोध का संवरण कीजिए, प्रजागणों के प्रति प्रसन्न होइए, अगर ऐसा न करेंगे तो जिस चराचर जगत् की आपने सृष्टि की है, वह सब विनाश को प्राप्त हो जाएगा। समस्त चराचर जगत् के हितार्थ अभी आप संहार हेतु कोई अन्य उपाय सोचिए, जिससे उनका एक ही बार में अंत न होकर, मृत्यु का ग्रास होने के पश्चात् भी प्रजाजन पुन: जन्मग्रहण कर सके।'' महादेव की प्रार्थना सुनकर ब्रह्माजी ने उस समय क्रोध का संवरण कर, मन और वाक् को संयत करने के पश्चात् अग्नि को अपने अंतर में समाहित कर लिया। तत्पश्चात् उन्होंने प्रजाजनों के जन्म और मृत्यु हेतु एक अन्य प्रकार का नियम संस्थापित किया। ब्रह्माजी ने जब अग्नि का उपसंहार किया ठीक उसी समय उनके इन्द्रिय-समूह के मध्य से पिंगल वसन कृष्ण-नयना, दिव्य कुंडल संपन्ना, दिव्याभरणभूषिता एक रमणी प्रादुर्भूत होकर दक्षिण दिशा की तरफ गमन करने लगी। ब्रह्मा और महादेव दोनों ने उसका अवलोकन किया। तब ब्रह्मा ने उसे 'मृत्यु' नाम से संबोधित किया और अपने समीप आने का आह्वान कर फिर कहा – '' तुम इस प्रजासमूह का विनाश करो; प्रजागणों के विनाश हेतु ही मैंने तुम्हारा आह्वान किया है। तुम मेरे निर्देशानुसार चाहे वह पंडित हो या मूर्ख हो सबका विनाश करो; इससे तुम्हारा कल्याण होगा।'' कमल-माला धारिणी मृत्यु देवी ब्रह्माजी का यह कथन सुनकर अतीव दु:खी होकर अविरत अश्रुधारा विसर्जन करने लगी। तब ब्रह्माजी ने भी मनुष्यों के कल्याण हेतु अपने उभय-कर-कमलों द्वारा मृत्यु देवी के अश्रुजल को धारण किया। तब मृत्यु भी निज दु:खभार का संवरण कर बोली –''हे प्रजापते! आपने मेरे सदृश कोमल-हृदया नारी को क्यों उद्भूत किया? मेरी सदृश नारी समस्त प्राणियों के प्रति ऐसा भयंकर एवं क्रूरता पूर्ण कर्म संपादित कर सकती है क्या? मैं अधर्म से डरती हूँ इसीलिए आप मुझे धर्म कार्य करने का आदेश प्रदान करें। मैं निरपराध शिशु, वृद्ध और तरुण प्राणियों का प्राण-हरण न कर पाऊँगी। मैं जब लोगों के प्रिय पुत्र, मित्र, भ्राता, माता या पिता का संहार करूँगी तब वे सभी मेरे अनिष्ट की कामना करेंगे। इसीलिए उन सभी दु:खी जनों के शोकाग्नि में मुझे चिरकाल तक दग्ध होना होगा एवं

नरक भोग करना पड़ेगा। हे पितः! पापाचारी व्यक्ति यमलोक जाकर नरक यातना भोगते हैं; अतः मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ आप मुझपर कृपा करें। इसी क्षण आपकी प्रसन्नता हेतु कहीं भी जाकर तपस्या करूँगी, ऐसा मैंने संकल्प लिया है।''

ब्रह्मा ने कहा – ''मृत्यु, प्रजागणों के संहार हेतु ही मैंने तुम्हारा संकल्प पूर्वक सृष्टि किया है। अतएव जाओ, समस्त प्रजागणों का संहार करो, यही मेरा आदेश व निर्देश है।''

ब्रह्मा की इस उक्ति से तब मृत्यु निर्वाक होकर, हाथ जोड़कर विनीत भाव से उनके मुख की तरफ देखने लगी। तब मृत्यु के इस तरह की अवस्था को देखकर ब्रह्मा ने क्रोध संवरण कर मृदु हास्य किया एवम् प्रणियों के प्रति दृष्टिपात किया। तब मृत्यु भी प्रजा संहार विषय पर प्रतिश्रुति न देकर वहाँ से चली गयी एवम् शीघ्र ही गो-तीर्थ जा पहुँची तथा एक पद पर दण्डायमान होकर उसने दीर्घकाल तक कठोर तपस्या किया। 'मृत्यु' की ऐसी कठोर तपस्या करने पर ब्रह्मा ने वहाँ जाकर मृत्यु से कहा – ''हे 'मृत्यु', तुम मेरा आदेश पालन करो।''

'मृत्यु' ने ब्रह्मा के आदेश की अवहेलना कर पुनः दीर्घकाल तक एकपद पर दण्डायमान होकर कठोर तपस्या की। इस तपस्या की परिसमाप्ति पर उन्होंने कुछ समय तक मृगगणों के साथ वन में विचरण किया; तत्पश्चात् कुछ काल तक पवन का आहार किया; तदन्तर उत्तम मौनव्रत का पालन कर जल में वास कर बहुत वर्षों तक तपस्या किया। उसके बाद मृत्यु ने कौशिकी नदी के तट पर वायु और जलाहार ग्रहण कर कठोर तपस्या किया। पुनः मेरू पर्वत और गंगातट पर जाकर काष्ठवत् दण्डायमान होकर उसने तपस्या की। इसके बाद जिस स्थान पर देवगणों ने युद्ध किया था उसी हिमालय शिखर पर पैर के अँगुठे पर खड़ी होकर दीर्घकाल तक तपस्या किया। तब ब्रह्मा मृत्यु के इस कठोर तपस्या से संतुष्ट होकर प्रसन्न हुए। ब्रह्मा ने कहा – ''वत्से! तुम इतनी क्यों परेशान हो? अभी मेरे आदेश का पालन करो।'' मृत्यु ने कहा – ''हे देव, मैं प्रजा संहार में सक्षम नहीं हूँ, आपको प्रसन्न करने हेतु मैं और जप-तप करूँगी।'' तब ब्रह्मा ने कहा – ''मृत्यु, तुम अगर मेरे आदेशानुसार प्रजा का संहार करोगी तो इससे अधर्म नहीं होगा, मेरे कथन को सत्य जानना। तुम्हारे मध्य सनातन धर्म प्रविष्ट होगा एवम् मैं और समस्त देवगण सर्वदा तुम्हारे हित-साधन में नियुक्त रहेंगे। मैं, तुम्हें एक और वर प्रदान करता हूँ कि जो प्रजागण व्याधि द्वारा पीड़ित होकर कलेवर त्याग करेंगे उनके लिए तुम दोषी नहीं होगी। तुम पुरूषगण पर पुरूषरूप में, स्त्रीगण पर स्त्रीरूप में और नपुंसकगण पर नपुंसक रूप में आक्रमण करोगी।''

ब्रह्मा के इस कथन पर मृत्यु ने कृतांजली पूर्वक पुनराय उनसे कहा – ''प्रभो! मैं प्रजासंहार नहीं कर सकूँगी।'' ब्रह्मा ने कहा, ''तुम प्रजासंहार करो। जिससे तुम्हारा अधर्म न हो इसकी व्यवस्था मैं करूँगा। तुम्हारे ही अश्रुबिंदु पतित हो रहे हैं उन्हें मैं निज हस्त में धारण कर रखा हूँ, वही अश्रुबिंदु कालक्रमानुसार घोर-व्याधि स्वरूप में प्रजागणों का संहार करेंगे। प्राणिगणों के अवसानकाल में तुम एक ही साथ काम और क्रोध का प्रेरण करोगी। राग-द्वेष रहित होकर इस कार्य का संपादन करने से अधर्म तुम्हारा स्पर्श नहीं कर पायेगा, वरन् तुम्हें धर्म की ही प्राप्ति होगी। अतएव तुम निज अधिकार को प्रसन्न चित्त से ग्रहण कर प्रजा संहार करो।''

तब मृत्यु देवी ब्रह्मा के शाप के भय से प्रजा संहार करने के आदेश को पालन करने में सम्मत हुई। उसी समय से प्राणिगणों का अंतकाल उपस्थित होने पर मृत्यु काम और क्रोध का प्रेरण कर उसी के माध्यम से उन सबों को मोहित कर प्राणिगण का संहार करती है एवम् व्याधि द्वारा मनुष्यगणों का शरीर क्षय हो जाता है।

(*'महाभारत' से संग्रहित*)

–संकलन श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

प्रत्यक्षीभूत उपलब्धित सत्य ज्ञान ही विशुद्ध ज्ञान होता है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के सामने प्रदीप का आलोक म्लान हो पड़ता है उसी प्रकार सत्ता में विशुद्ध ज्ञान के आलोक के प्रकाशित होने पर अप्रत्यक्षीभूत अनुपलब्धित सम्पूर्ण ज्ञान मलिन हो जाता है। ज्ञान मिश्रित भक्ति द्वारा ही भगवत् दर्शन, सत्य दर्शन सम्भव होता है। **–श्रीश्रीमाँ सर्वाणी**